International Journal of Information Movement Vol.I Issue III (July 2016)
Website: ijim.in ISSN: 2456-0553 (online) Pages 82-90

स्त्री शिक्षा के क्षेत्र में आर्य समाज का योगदान

ममता
शोधार्थी, पीएच.डी. (एजूकेशन),
दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास

हरियाणा प्रदेश में आर्य समाज द्वारा उच्च शिक्षा के क्षेत्र में अभूतपूर्व योगदान दिया है। यहाँ उच्च शिक्षा देने हेतु आर्य समाज की दो प्रकार की संस्थाएँ हैं–

1. महाविद्यालय 2. गुरुकुल

सभी महाविद्यालय स्वातंत्रयोत्तर काल के हैं परन्तु गुरुकुल सम्भवतः 1947 ई. से पहले स्थापित हो गए थे। दोनों ही प्रकार की संस्थाओं ने यहाँ शिक्षा के क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण कार्य किया है।

हरियाणा में आर्यसमाज द्वारा चलाई हुई आर्य शिक्षण संस्थाएँ :

हरियाणा में आर्य समाज द्वारा चलाई हुई शिक्षण संस्थाएँ निम्न हैं–[1]

क) दयानन्द एंग्लो वैदिक महाविद्यालय (डी.ए.वी. कॉलेज)

ख) आर्य समाज तथा आर्य समाज से जुड़ी संस्थाओं व संगठनों द्वारा चलाए जा रहे महाविद्यालय

ग) गुरुकुल

हरियाणा प्रदेश में कुल 121 महाविद्यालय हैं। इन में आर्य समाज द्वारा खोली गई संस्थाओं की संख्या निम्नलिखित तालिका से पता चलती है–

तालिका 1 हरियाणा में महाविद्यालय

क्रमांक	महाविद्यालय	संख्या
1.	स्रकारी	20
2.	डी.ए.वी. कॉलेज	10
3.	आर्य समाज तथा आर्य समाज से जुड़ी संस्थाओं / संगठनों द्वारा चलाए जा रहे महाविद्यालय	07
4.	अन्य गैर सरकारी	64
	कुल योग	**121**

उपर्युक्त तालिका 1. से पता चलता है कि हरियाणा में 121 में यहां 14 प्रतिशत महाविद्यालयों की देखरेख ओर व्यवस्था आर्य समाज द्वारा हो रही है। ये 17 आर्य महाविद्यालय कहाँ–कहाँ किस जिले में स्थित हैं यह निम्न तालिका से स्पष्ट हो जाता है–

तालिका 2 हरियाणा में महाविद्यालयों की जिलेवार स्थिति

क्रमांक	जिला	डी.ए.वी. कॉलेज	सरकारी कॉलेज	अन्य गैर सरकारी कॉलेज	आर्य समाज से जुड़े कॉलेज	कुल
1.	अम्बाला	3	4	9	1	17
2.	भिवानी		3	4		7
3.	जींद		3	3		6
4.	करनाल	3	4	2		9
5.	महेन्द्रगढ़	—	8	—	—	8
6.	रेवाड़ी	—	3	2	—	5
7.	गुड़गांव	—	5	—	—	5
8.	हिसार	—	4	4	1	9
9.	पंचकूला	—	4	—	—	4
10.	पफरीदाबाद	—	3	5	—	8
11.	सिरसा	—	1	9	—	10
12.	फतेहाबाद	—	4	1	—	5
13.	पानीपत	—	2	4	1	7
14.	कैथल	2	1	6	—	9
15.	कुरुक्षेत्र	1	—	6	2	9
16.	रोहतक	—	4	9	—	13
17.	झज्जर	—	11	2	—	13
18.	सोनीपत	—	1	7	—	8
19.	यमुनानगर	3	1	9	—	13
20.	मेवात	—	3	2	—	5
21.	पलवल	—	1	2	—	3
	कुल	12	70	86	5	173

स्रोत – कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र, महर्षिदयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक तथा चौ. देवीलाल विश्वविद्यालय से प्राप्त जानकारी के अनुसार।

उपर्युक्त तालिका 2 से हरियाणा प्रदेश के प्रत्येक जिला की शिक्षा की स्थिति स्पष्ट हो जाती है। आंकड़े दर्शाते हैं कि डी.ए.वी. शिक्षण संस्थाएं केवल उत्तरी हरियाणा के अम्बाला, कुरुक्षेत्र, कैथल, करनाल तथा यमुनानगर तक ही सीमित हैं। यदि इस क्षेत्र के ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य पर नजर डाली जाए तो पता चलता है कि केवल उन स्थानों, जहां भारत विभाजन के बाद विस्थापित रहे थे, पर ही डी.ए.वी. शिक्षण

संस्थाएं कार्यरत हैं। हालांकि आर्य समाज का प्रभाव सम्पूर्ण हरियाणा पर पड़ा, लेकिन आर्य समाज तथा इससे जुड़े संगठनों/ संस्थाओं ने केवल हिसार, अंबाला, पानीपत तथा कुरुक्षेत्र में ही महाविद्यालय खोले। यदि आंकड़ों की गणना करें तो प्रदेश में कुल 173 महाविद्यालयों में आर्यसमाज तथा इससे जुड़ी संस्थाओं/संगठनों के 5 महाविद्यालय हैं, जो इसका 8.6 प्रतिशत हैं। इसी प्रकार कुल 173 महाविद्यालयों में डी.ए.वी. कॉलेज मात्रा 12 हैं, जो इसका 20.76 प्रतिशत हैं। दोनों आर्य समाज तथा डी.ए.वी. कॉलेजों की संख्या प्रदेश के कुल 173 महाविद्यालयों में 17 हैं। जो इसका 29.41 प्रतिशत है। यदि कुल 70 सरकारी महाविद्यालयों की आर्य समाज व इसकी संस्थाओं/संगठनों के महाविद्यालयों से तुलना करें तो यह उसका 3.05 प्रतिशत है। वहीं गैर सरकारी महाविद्यालयों की तुलना में इनका प्रतिशत 4.3 है। डी.ए.वी. महाविद्यालयों का सरकारी महाविद्यालयों की तुलना में आंकड़ा 8.4 प्रतिशत है, वहीं गैरसरकारी महाविद्यालयों की तुलना में इनका प्रतिशत 10.32 है।

उपर्युक्त तालिका 2 से जिलेवार डी.ए.वी. महाविद्यालयों की स्थिति स्पष्ट हो जाती है। इससे पता चलता है कि सिरसा, भिवानी, गुड़गांव, महेन्द्रगढ़ और सोनीपत, जींद जिलों में कोई महाविद्यालय नहीं है।

यदि इन महाविद्यालयों की स्थापना का इतिहास देखें तो पता चलता है कि ये महाविद्यालय पाकिस्तान से यहाँ आकर बसने वाले लोगों ने शुरु किये। यहाँ के पूर्व बसे हुए लोगों ने अपनी जातियों के नाम पर पहले ही यहाँ महाविद्यालय खोल रखे थे जैसे रेवाड़ी महेन्द्रगढ़ में अहीर कॉलेज, रोहतक में जाट कॉलिज, सोनीपत और भिवानी में वेश्य कॉलिज आदि। पाकिस्तान से आने वाले अधिकतर लोग ऊपरी हरियाणा में बने। यहाँ के अधिकतर लोग आर्य समाजी थी। यहाँ ऊपरी क्षेत्र में पूर्व बसने वाले लोगों ने कोई जातीय कॉलेज भी नहीं बनवाए हुए थे। अतः उन्होंने वर्षों महाविद्यालय खोले। इससे स्त्री शिक्षा को बढ़ावा मिला।

क) डी. ए. वी कॉलेज : जैसा कि पहले देख चुके हैं कि आर्यसमाज का इस दिशा में पहला प्रयास दयानन्द एंग्लो वैदिक विद्यालय की स्थापना द्वारा लाहौर पाकिस्तान के स्थान पर 1 जून, 1886 ई. को हुआ था। आरम्भ में यह हाई स्कूल स्तर की संस्था थी। तीन वर्ष पश्चात् यह महाविद्यालय के रूप में परिणित हुई। जिसमें केवल एम. ए. तक की कक्षाएँ लगती थी। दो वर्ष पश्चात् बी. ए. तक की शिक्षा दी जाने लगी। ये शिक्षण संस्था बहुत ही कामयाब रही। जहाँ तक हरियाणा का प्रश्न है यहाँ 1947 ई. से पूर्व कोई भी

डी. ए. वी. उच्च शिक्षा का केन्द्र नहीं था। स्त्री शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए आर्य समाज द्वारा अनेक शिक्षण संस्थानों की स्थापना की गई। 1847 ई. के बाद निम्नलिखित मुख्य संस्थाएँ स्थापित हुई।

1. डी.ए.वी. कॉलेज, अम्बाला शहर[3]

1886 ई. में लाहौर में जिस डी.ए.वी. महाविद्यालय की स्थापना की गई थी, भारत विभाजन के पश्चात् 1948 ई. में उसे ही अम्बाला शहर में पुनः स्थापित किया गया। इसे सबसे पुराना डी.ए.वी. कॉलेज कहा जाता है। यह कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र से सम्बद्ध है। महाविद्यालय में कला, वाणिज्य तथा विज्ञान के साथ–साथ अनेक प्रोफेशनल विषयों की पढ़ाई की व्यवस्था है। पुस्तकालय उच्च स्तर का है।

खेलकूद, राष्ट्रीय सेवा योजना तथा नैशनल कैडेट कोर आदि की समुचित व्यवस्था है। स्त्री शिक्षा को बढ़ावा देने, लड़कियों को पढ़–लिखकर आत्मनिर्भर बनाने में इस संस्थान का अहम् योगदान है।

दयानन्द महाविद्यालय, हिसार[4]

हरियाणा की शिक्षण संस्थाओं में इस महाविद्यालय का महत्वपूर्ण स्थान है। इसकी स्थापना जून, 1950 ई. में हुई थी। यह महाविद्यालय कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय से सम्बद्ध है तथा इसमें कला, विज्ञान तथा कॉमर्स विषयों की स्नातक स्तर की शिक्षा व्यवस्था है। विद्यार्थियों की संख्या लगभग 2500 है। लगभग 100 कन्याएँ भी इसमें विज्ञान की शिक्षा प्राप्त करने के लिए प्रविष्ट हैं। अध्यापन के लिए लगभग 90 प्राध्यापक नियुक्त हैं। लगभग 75 गैर शिक्षक कर्मचारी इनके अतिरिक्त कॉलेज में एक छात्रावास, पुस्तकालय तथा खेलकूद की भी समुचित व्यवस्था है।

डी. ए. वी. कॉलेज, साढौरा[6]

जुलाई, 1968 ई. में अम्बाला जिला के सढौरा नामक छोटे से कस्बे में डी. ए.वी. कॉलेज की स्थापना हुई। शुरू में 173 विद्यार्थी कॉलेज में प्रविष्ट हुए, जिनमें 12 कन्याएँ भी थी। तीन वर्ष बाद विद्यार्थियों की संख्या 520 तक पहुंच गई और अब निरन्तर बढ़ती जा रही है। यह कॉलेज भी कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय से जुड़ा है तथा इसमें आर्टस विषयों की स्नातक स्तर की शिक्षा की व्यवस्था है।

डी. ए. वी. कॉलेज, नन्योला[6]

इस महाविद्यालय की स्थापना 7 जुलाई, 1974 में हुई थी। पंजाब तथा हरियाणा के सीमावर्ती देहाती क्षेत्रों में स्थित यह महाविद्यालय दोनों राज्यों के ग्रामीण लोगों में उच्च शिक्षा के प्रसार के सम्बन्ध में महत्त्वपूर्ण कार्य कर रहा है। इसमें विद्यार्थियों की संख्या अधिक नहीं हैं क्योंकि इस क्षेत्र के हाई स्कूलों का परीक्षा –परिणान संतोषजनक नहीं रहता। सन् 1981 के प्रारम्भ में 167 विद्यार्थी इस महाविद्यालय में शिक्षा प्रापत कर रहे थे। यह भी कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र से जुड़ा है। यहाँ पर केवल आर्टस विषयों की स्नातक स्तर तक शिक्षा दी जाती है।

डी. ए. वी. कॉलेज, पूण्डरी[7]

हरियाणा के करनाल जिला में करनाल–कैथल मार्ग पर पूंडरी एक छोटा सा कस्बा है। महाविद्यालय की आधारशिला तत्कालीन मुख्यमंत्री द्वारा 7 अप्रैल, 1969 को रखी गयी थी।

डी. ए. वी. कॉलेज, पिहोवा[8]

यह कॉलेज 1981 ई. में स्थापित हुआ था। इसकी आधारशिला 13 मई, 1980 को हरियाणा के मुख्यमंत्री श्री भजनलाल द्वारा रखी गई थी। उसकी स्थापना में हरियाणा के सिंचाई मंत्री श्री तेजा सिंह का विशेष योगदान था। 6 मार्च 1981 को श्री तेजासिंह के नेतृत्व में पिहोवा के निवासियों के एक शिष्ट मण्डल ने दो लाख रुपये और तीस एकड़ जमीन भी कॉलेज कमेटी को अर्पित की। बाद में पिहोवा तथा उसके समीपवर्ती गाँवों के लोगों ने भी उत्साहपूर्वक कॉलेज के लिए दान दिया, जिसके परिणामस्वरूप 5 अगस्त 1981 ई. को महाविद्यालय प्रारम्भ हुआ। यह कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय से सम्बद्ध है तथा कला, वाणिज्य तथा विज्ञान विषयों की स्नातक स्तर तक की शिक्षा की व्यवस्था है।

डी. ए. वी. कॉलेज, यमुनानगर[9]

इस महाविद्यालय की स्थापना 1953 ई. में हुई थी। यह कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय से जुड़ा है। इसमें कला, वाणिज्य तथा विज्ञान विषयों की स्नातक स्तर तक की शिक्षा दी जाती है। धर्मशिक्षा की पढ़ाई को भी इस कॉलेज में समुचित महत्त्व दिया जाता है।

सोहनलाल डी.ए.वी शिक्षा महाविद्यालय, अम्बाला[10]

यह कॉलेज स्वर्गीय रायबहादुर श्री सोहनलाल द्वारा 1939 ई. में लाहौर में स्थापित किया गया था। 1954 ई. में इसे अम्बाला शहर में स्थापित किया गया। हरियाणा सरकार द्वारा नियुक्त सर्वेक्षण समिति ने उसे राज्य का सर्वश्रेष्ठ शिक्षा महाविद्यालय घोषित किया गया है। यह कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय से सम्बद्ध है और इसमें एम.एड. डिग्री के लिए भी शिक्षा की व्यवस्था है। यह सहशिक्षा संस्था है। महाविद्यालय में पढ़ाई से पहले दैनिक प्रार्थना होती है जिसमें वेदमंत्रों का पाठ किया जाता है। धर्म शिक्षा की परीक्षा में भी विद्यार्थी सम्मिलित होते हैं।

ख) अन्य आर्य महाविद्यालय[11]

आर्य समाज की दृष्टि से हरियाणवी अपना अलग महत्त्व रखता है। भारतवर्ष में यही एक ऐसा राज्य है जिसके बहुसंख्यक निवासी आर्य समाज के प्रभाव में है। अतः आर्य शिक्षण संस्थाओं का भी बड़ी अच्छी संख्या में होना स्वाभाविक है।

गुरुकुलों के अतिरिक्त कितने ही स्कूल और कॉलेज हरियाणा में हैं जो सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, हरियाणा तथा आर्य प्रतिनिधि सभा, हरियाणा से सम्बद्ध हैं। उनकी संख्या 34 है। बहुसंख्या कन्याओं की शिक्षण संस्थाओं की है। अम्बाला छावनी के आर्य गर्ल्स कॉलेज में स्नातकोत्तर स्तर तक की शिक्षा है। आर्य प्रतिनिधि सभा से सम्बद्ध अन्य महत्त्वपूर्ण संस्थाएं निम्नलिखित हैं–

आर्य कन्या महाविद्यालय, नरवाना[12]

इस संस्था की स्थापना लाला पतराम द्वारा की गयी थी। आर्य–प्रतिनिधि सभा, हरियाणा द्वारा आयोजित 'धर्म प्रवेशिका' परीक्षा छात्राओं से दिलायी जाती है। यही यज्ञ का अनुष्ठान प्रतिदिन किया जाता है।

वेश्य आर्य कन्या महाविद्यालय,बहादुरमण्डी[13]

यहां प्राईमरी से इन्टर सतर की पढ़ाई की व्यवस्था है। कन्याओं को वैदिक धर्म की मान्यताओं तथा आर्य समाज के आदर्शों व उद्देश्यों से परिचित कराने के लिए समय–समय पर धार्मिक नेताओं तथा विद्वानों के व्याख्यान कराये जाते हैं।

आर्य कॉलेज, पानीपत[14]

1954 ई. में इसकी स्थापना की गई थी। आरम्भ में 250 विद्यार्थी थे। इसके प्रथम प्रबन्धक बाबू रामगोपाल एडवोकेट थे। पानीपत में तीन अन्य कॉलेज हैं लेकिन छात्रावास की सुविधा आर्य कॉलेज में ही है। कॉलेज का परिसर 100 बीघा जमीन में फैला हुआ है।

पाठ्यक्रम :

इन संस्थाओं तथा डी.ए.वी. कॉलेजों के पाठ्यक्र में विशेष अन्तर नहीं है। ये शिक्षण संस्थाएँ केवल संस्कृत तथा हिन्दी पर बल देती है। शिक्षा का स्तर ऊंचा रखा जाता है। कुछ धर्म शिक्षा दी जाती है जो आर्य समाज के सिद्धान्तों पर आधारित है।

निष्कर्ष :

उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि हरियाणा में 173 महाविद्यालयों में से 5 महाविद्यालय आर्य समाज तथा उससे सम्बद्ध संगठनों/संस्थाओं तथा 12 महाविद्यालय डी.ए.वी. संस्थानों द्वारा चलाये जा रहे हैं, लेकिन यह विवरण समस्त कहानी नहीं कहता केवल संख्यात्मक कहानी बताते हैं। जहां तक शिक्षा की गुणात्मकता का प्रश्न है वह इन आंकड़ों से प्रदर्शित नहीं होती। शोधार्थी ने प्रत्येक उस स्थान पर जाकर जहां महाविद्यालय स्थित है एक संक्षिप्त सर्वेक्षण द्वारा यह निष्कर्ष निकाला कि साधारण महाविद्यालयों की अपेक्षा अन्य आर्य शिक्षण संस्थाएं गुणात्मक दृष्टि से अच्छी शिक्षा प्रदान करती हैं। इन शिक्षण संस्थाओं की आर्थिक स्थिति अपेक्षाकृत अच्छी है तथा पढ़ने व पढ़ाने की अधिक सुविधाएं हैं। प्रशासकीय दृष्टि से ये संस्थाएं सप्रबन्धित हैं। स्त्री शिक्षा को विशेष बल दिया गया है।

ग) गुरुकुल :

जैसा कि पहले देख चुके हैं स्वामी श्रद्धानन्द ने 1902 ई. में हरिद्वार के निकट गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना की। यह गुरुकुल अल्पावधि में ही एक विशाल राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान बन गया और इसके देखा देखी बहुत से अन्य गुरुकुल खुले। हरियाणा में उच्च शिक्षा देने वाले विशेष गुरुकुल इस प्रकार है–

तालिका 3. हरियाणा में उच्च शिक्षा देने वाले गुरुकुल

क्रमांक	गुरुकुल का नाम	स्थान	जिला
1.	मठिण्डू	मटिण्डू	रोहतक
2.	गुरुकुल विद्यापीठ, भेंसवाल	भेंसवाल	सोनीपत
3.	श्रीमद्दयानन्द विद्यापीठ	गद्पुरी	गुड़गांव
4.	आर्ष गुरुकुल	कालवा	जींद
5.	दयानन्द वैदिक संस्था, आदर्श गुरुकुल	सिंहपुरा	रोहतक
6.	मद्दयानन्द आर्य विद्यापीठ	झज्जर	रोहतक
7.	गुरुकुल	कुरुक्षेत्र	कुरुक्षेत्र

उपर्युक्त तालिका 3. से पता चलता है कि रोहतक में सबसे अधिक गुरुकुल है जो दसवीं के बाद शिक्षा देते हैं। यह आर्य समाज द्वारा प्रतिपादित पुरानी शिक्षा पद्धति पर आधारित हैं।

जिलावार लड़के–लड़कियों के गुरुकुल इस निम्न तालिका के अनुसार हैं–

तालिका 4. जिलेवार उच्च शिक्षा देने वाले गुरुकुलों का वितरण

क्रमांक	जिला	लड़कों के लिए	लड़कियों के लिए	सहशिक्षा	कुल
1.	अम्बाला	–	–	–	–
2.	कुरुक्षेत्र	–	–	–	–
3.	करनाल	–	–	–	–
4.	रोहतक	3	1	–	4
5.	सोनीपत	1	2	–	3

6.	गुड़गांव	–	–	–	–
7.	हिसार	–	–	–	–
8.	जींद	1	–	–	1
9.	महेन्द्रगढ़	–	–	–	–
10.	भिवानी	–	–	–	–
11.	फरीदाबाद	–	–	–	–
12.	सिरसा	–	–	–	–
13.	रेवाड़ी	–	–	–	–
14.	पलवल	–	–	–	–
15.	झज्जर	–	–	–	–
16.	यमुनानगर	–	–	–	–
17.	पानीपत	–	–	–	–
18.	फतेहाबाद	–	–	–	–
19.	पंचकूला	–	–	–	–
20.	कैथल	–	–	–	–
21.	मेवात	–	–	–	–
	कुल	**5**	**3**	**0**	**8**

स्रोत – गुरुकुलों के दौरे कर एकत्र आंकड़े

उपर्युक्त तालिका 4 से स्पष्ट हो जाता है कि लड़कों के गुरुकुल लड़कियों से अधिक हैं। सहशिक्षा देने वाला कोई गुरुकुल नहीं है क्योंकि महर्षि दयानंद सरस्वती सहशिक्षा के विरोधी थे।

कन्या गुरुकुल :

कन्या गुरुकुल, खानपुर कलां ;सोनीपतद्ध :

इस गुरुकुल की स्थापना हरियाणा में आर्य समाज के प्राण तथा महान नेता शहीद भक्त फूल सिंह ने 1936 ई. में की थी। नारी जाति की दशा के सुधार के लिए उनके मन में यह विचार आया कि यदि बालकों के गुरुकुलों की तरह बालिकाओं के भी गुरुकुल खोले जाएं तो स्त्री जाति के उत्थान में बड़ी सहायता मिल सकती है।

यह गुरुकुल बाल्यावस्था में ही था कि गुरुकुल में रात नौ बजे धर्मान्ध मुसलमानों द्वारा भक्त पूफलचन्द की उस समय गोलियों से हत्या कर दी गई, जब वह एक सरोवर के पास चबूतरे पर बैठकर संध्या कर रहे थे। यह घटना 14 अगस्त 1942 ई. की है। भक्तजी के बलिदान के बाद गुरुकुल की स्वामिनी सभा ने उनके द्वारा स्थापित संस्था को बड़े उत्साह से चलाया।

1967 ई. में यहाँ गुरुकुल की शिक्षा के साथ–साथ एक डिग्री कॉलेज की तथा बाद में प्रशिक्षण महाविद्यालय की स्थापना हुई। इसमें बी.एड., ओ.टी., नर्सरी, आर्ट एंड क्राफ्ट आदि की शिक्षा प्रारम्भ हुई।

लड़कियों को आयुर्वेद की शिक्षा देने के लिए 1972 ई. में यहाँ एक आयुर्वेद महाविद्यालय खोला गया। इसका पाठ्यक्रम छः वर्ष का है। इसमें आयुर्वेद एवं वर्तमान चिकित्सा पद्धति के सभी अंगों–शरीर शास्त्र, शरीर क्रियाविज्ञान, रोगनिदान, चिकित्सा आदि का पूरा ज्ञान कराया जाता है। यहाँ की परीक्षा उत्तीर्ण करने पर बेवलर ऑपफ आयुर्वेदिक मैडीसन एण्ड सर्जरी बी.ए.एम.एस. की उपाधि दी जाती है।

कन्या महाविद्यालय, लोवा कलां रोहतक :

इस गुरुकुल की स्थापना 15 अगस्त, 1962 ई. को श्रावणी के पवित्र पर्व के दिन स्वामी मानाचार्य सरस्वती ने अपनी 40 एकड़ भूमि में कन्याओं के लिए आर्य शिक्षण संस्था की स्थापना की।

इस संस्था का सभी कार्य अवैतनिक रूप से होता है। संस्था आत्मनिर्भर है। स्नातक तक की शिक्षा की व्यवस्था है। छात्रावास की सुविधा है।

कन्या गुरुकुल महाविद्यालय, खरखोदा सोनीपत :

इसकी स्थापना 15 अगस्त, 1974 ई. को भक्त दरियाव सिंह हुमायूंपुर निवासी ने की थी। आचार्य भगवानदेव ओमानन्द के सम्पर्क में आकर उनकी श्रद्धा आर्य समाज के प्रति बढ़ी थी।

प्रारम्भ में इस संस्था में 'प्रभाकर' व 'शास्त्री' कक्षाओं की शिक्षा का प्रबन्ध था। तत्पश्चात् हरियाणा सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त जे.बी.टी., होम साईंस, आर्ट एंड क्राफ्ट तथा ओ.टी. की ट्रेनिंग कक्षाएँ चलाई गयी। इसका संचालन गुरुकुल मटिण्डू की कमेटी द्वारा होता है।

दूसरी ओर यदि प्राथमिक, माध्यमिक तथा उच्च शिक्षा या विद्यालय शिक्षा के विकास तथा आर्य समाज के योगदान के विषय में स्पष्ट है कि समाज में अच्छी तथा गुणात्मक शिक्षा के विकास में आर्य समाज तथा इससे जुड़ी संस्थाओं/संगठनों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

संदर्भ सूची :

1. विद्यालंकार, सत्यकेतु, आर्य समाज का इतिहास, पृ. 110–120
2. विश्वविद्यालयों से सम्बन्धित महाविद्यालयों के विवरण से
3. यह विवरण कॉलेज की वार्षिक रिपोर्टस के आधार पर लिखा गया है।
4. यह विवरण कॉलेज की वार्षिक रिपोर्टस द्वारा प्रदत्त सामग्री के आधार पर लिखा गया है।
5. कॉलेज की वार्षिक रिपोर्टस द्वारा प्रदत्त सामग्री के आधार पर।
6. कॉलेज की वार्षिक रिपोर्टस द्वारा प्रदत्त सामग्री के आधार पर।
7. कॉलेज की वार्षिक रिपोर्टस के आधार पर लिखा गया।
8. कॉलेज की वार्षिक रिपोर्ट तथा प्रिंसिपल श्री जी.डी जिन्दल जी द्वारा प्रदत्त सामग्री के आधार पर।
9. कॉलेज की वार्षिक रिपोर्टस के आधार पर।
10. महाविद्यालय की वार्षिक रिपोर्ट के आधार पर लिखा गया है।
11. विद्यालंकार, सत्यकेतू, आर्यसमाज का इतिहास, भाग–3, पृ. 118
12. कॉलेज की वार्षिक रिपोर्टस के आधार पर
13. वही
14. कॉलेज की वार्षिक रिपोर्टस के आधार पर लिखा गया।